# अलौकिक कर्म करने की कला

अव्यक्तमूर्त अर्थात् इस शरीर में पार्ट बजाने वाले अति न्यारे और अति प्यारे की स्थिति में स्थित रहने के अनुभवीमूर्त बन गये हो? हर समय मालिक और बालक, दोनों ही साथ-साथ पार्ट बजाने में यत्न करने वाले नहीं, लेकिन सहज स्वरूप बन गये हो? वा मालिक बनते हो तो बालकपन भूल जाता है वा बालक बनते हो तो मालिकपन भूल जाता है? अभी-अभी मालिक, अभी-अभी बालक। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी देह से भी परे, कर्म से भी परे, लग्न में मगन रहने वाले योगी बन सकते हो? संकल्प और कर्म दोनों ही समान बने हैं वा संकल्प और कर्म में अन्तर है? संकल्प किया और प्रैक्टिकल रूप में आया, ऐसी प्रैक्टिस हुई है? याद की यात्रा पर चलने वाले राही इतने समीप आये हो? सहज भी और समीप भी हैं, यह दोनों ही अनुभव होते हैं? इस याद की यात्रा के अनेक अनुभव करते-करते अब नॉलेजफुल और पावरफुल बने हो? जैसे यात्रा में बीच-बीच में चट्टियां आती हैं जिससे मालूम पड़ता है कि कहाँ तक पहुँचे हैं और कहाँ तक अब पहुँचना है? आप याद की यात्रा के राही इस यात्रा की कितनी चट्टियां पार कर चुके हो अर्थात् याद की कितनी स्टेजेस को पार कर चुके हो? लास्ट स्टेज वा फाइनल स्टेज कौन-सी है? उसको ऐसे ही स्पष्ट देख और जान रहे हो जैसे कोई वस्तु बहुत समीप और सम्मुख आ जाती है तो उसको सहज जान और देख सकते हैं, ऐसे ही अपनी मंज़िल को स्पष्ट और सहज जान और देख रहे हो कि अभी देखने से दूर है? देखते रहते हो वा सिर्फ जाना है? वा इतना सम्मुख वा समीप आ गये हो जो कई बार उस मंज़िल पर पहुँच, थोड़े समय का अनुभव भी करते रहते हो? अनुभव होता है? फिर उसी अनुभव में रहते क्यों नहीं हो? स्थिति का अनुभव होता है, बाकी स्थित रहना नहीं आता, ऐसे? सदा स्थित क्यों नहीं हो पाते हो, कारण? सर्विस वा जो ब्राह्मणों के कर्म हैं, जिस कर्म को अलौकिक कर्म कहा जाता है, ऐसे अलौकिक कर्म वा ईश्वरीय सेवा कभी भी स्थिति से नीचे लाने के निमित्त नहीं बन सकती। अगर कोई को ऐसे अनुभव होता है कि अलौकिक कर्म के कारण नीचे आते हैं तो उसका अर्थ है कि उस आत्मा को अलौकिक कर्म करने की कला नहीं आती है। जैसे कला दिखाने वाले कलाबाज वा सर्कस में काम करने वाले हर कर्म करते हुए, हर कर्म में अपनी कलाबाजी दिखाते हैं, उन्हों का हर कर्म कला बन जाता है, तो क्या आप श्रेष्ठ आत्माएं, कर्मयोगी, निरन्तर योगी, सहजयोगी, राजयोगी हर कर्म को न्यारे और प्यारे रहने की कला में नहीं कर सकते? जैसे उन्हों के शरीर की कला देखने के लिये कितने लोग इच्छुक होते हैं। आपकी बुद्धि की कला, अलौकिक कर्म की कला देखने के लिए सारे विश्व की आत्माएं इच्छुक बन कर आयेंगी। तो क्या अब यह कला नहीं दिखायेंगे? जैसे वह लोग शरीर के कोई भी अंग को जैसे चाहें, जहाँ चाहें, जितना समय चाहें कर सकते

हैं, यही तो कला है। आप सभी भी बुद्धि को जब चाहो, जितना समय चाहो, जहाँ स्थित करना चाहो वहाँ स्थित नहीं कर सकते हो? वह है शरीर की बाजी, यह है बुद्धि की। जिसको यह कला आ जाती है वही 16 कला सम्पन्न बनते हैं। इस कला से ही अन्य सर्व कलाएं स्वत: ही आ जाती हैं। ऐसे एक देही-अभिमानी स्थिति सर्व विकारों को सहज ही शान्त कर देती है। ऐसे यही बुद्धि की कला सर्व कलाओं को अपने में भरपूर कर सकती है वा सर्व कला सम्पन्न बना सकती है। तो इस कला में कहाँ तक अभ्यासी वा अनुभवी बने हो? अभी-अभी सभी को डायरेक्शन मिले कि एक सेकण्ड में अशरीरी बन जाओ तो बन सकते हो? सिर्फ एक सेकण्ड में स्थित हो सकते हो? जब कर्म में बहुत व्यस्त हों, ऐसे समय भी डायरेक्शन मिले! जैसे जब युद्ध प्रारम्भ होता है तो अचानक ऑर्डर निकलते हैं–अभी-अभी सभी घर छोड़ बाहर चले जाओ। फिर क्या करना पड़ता है? जरूर करना पड़े। तो बापदादा भी अचानक डायरेक्शन दें कि इस शरीर रूपी घर को छोड़, इस देह-अभिमानी की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीट होम में चले जाओ तो कर सकेंगे? युद्धस्थल में रुक तो नहीं जायेंगे? युद्ध करते-करते ही समय तो नहीं बिता देंगे कि जावें, न जावें? जाना ठीक होगा वा नहीं? यह ले जावें वा छोड़ जावें? इस सोच में समय गंवा देते हैं। ऐसे ही अशरीरी बनने में अगर युद्ध करने में ही समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आयेगा? अगर युद्ध करते-करते रह गये तो क्या फर्स्ट डिवीजन में आयेंगे? ऐसे उपराम, एवररेडी बने हो? सर्विस करते और ही स्थिति शक्तिशाली हो जाती है क्योंकि आपकी श्रेष्ठ स्थिति ही इस समय की परिस्थितियों को परिवर्तन में लायेगी। तो सर्विस करने का लक्ष्य क्या है? किसलिये सर्विस करते हो? परिस्थितियों को परिवर्तन करने लिये ही तो सर्विस करते हो ना, सर्विस में स्थिति साधारण रहे तो वह सर्विस हुई? इस याद की यात्रा की मुख्य 4 सब्जेक्ट्स हैं जिसे चेक करो कि कहाँ तक पहुँचे हैं? जो पहले स्थिति थी वो अब भी कोई-कोई की है, वह क्या? वियोगी। दूसरी स्टेज वियोगी के बाद योगी बनते हैं। तीसरी स्टेज योगी के बाद सहयोगी बनते हैं। सहयोगी बनने के बाद लास्ट स्टेज है सर्वत्यागी बनते हैं? इन चार सब्जेक्ट्स को सामने रखते हुये देखो कि कितनी पौढ़ियां पार की हैं, कितने तक ऊपर चढ़े हो? क्या अभी तक भी बार-बार कब वियोगी तो नहीं बनते हो? सदा योगी वा सहयोगी बन करके चलते हो? अगर कोई भी विघ्न आता है, विघ्न के वश होना अर्थात् वियोगी होना, तो वियोगी तो नहीं बनते हो? विघ्न योगयुक्त अवस्था को समाप्त कर सकता है? बाप की स्मृति को विस्मृति में ला देता है। विस्मृति अर्थात् वियोगी। तो योगीपन की स्टेज ऐसे ही निरन्तर रहे जैसे शरीर और आत्मा का जब तक पार्ट है तब तक अलग नहीं हो पाती है। वैसे बाप की याद बुद्धि से अलग न हो। बुद्धि का साथ सदैव याद अर्थात् बाप के साथ हो–ऐसे को कहा जाता है योगी, जिसको और कोई भी स्मृति अपनी तरफ आकर्षित न कर पाये। जैसे बहुत ऊंची वा श्रेष्ठ पॉवर के आगे कम पॉवर वाले कुछ भी नहीं कर पाते हैं, ऐसे अगर सर्वशक्तिमान् की

याद सदा साथ है तो और कोई भी याद बुद्धि में अंदर आ नहीं सकती। इसको ही सहज और स्वत: योगी कहा जाता है। वह लोग सिर्फ कहते हैं और यहाँ प्रैक्टिकल स्वत: योगी हैं। तो ऐसे योगी बने हो? ऐसा योगी सदा हर सेकण्ड, हर संकल्प, हर वचन, हर कर्म में सहयोगी अवश्य होगा। अगर संकल्प में सहयोगी है, कर्म में नहीं है वा कर्म में सहयोगी है, किसी बात में नहीं है तो ऐसे को सहयोगी की स्टेज तक पहुँची हुई आत्मायें नहीं कहेंगे। एक संकल्प भी सहयोग के बिना चलता है तो इसको व्यर्थ कहेंगे।

जो व्यर्थ गंवाने वाले होते हैं वह कभी किसके सहयोगी नहीं बन सकते, स्वयं में शक्तिशाली नहीं बन सकते। ऐसे सर्व स्नेही, सहयोगी, सर्वंश त्यागी वा सर्वत्यागी सहज ही बन जाते हैं। जबकि भक्ति में भी सिर्फ कोई ईश्वर के अर्थ दान करते हैं तो उन्हों को भी विनाशी राजपद की प्राप्ति होती है तो सोचो जो हर संकल्प और सेकण्ड ईश्वरीय सेवा के सहयोग में लगाते हैं, उसकी कितनी श्रेष्ठ प्राप्ति होगी! ऐसे महादानी सर्वत्यागी सहज ही बन जाते हैं। ऐसे सर्वत्यागी वर्तमान और भविष्य में सर्वश्रेष्ठ भाग्यशाली बनते हैं। न सिर्फ भविष्य लेकिन वर्तमान समय भी ऐसे श्रेष्ठ भाग्यशाली आत्मा के भाग्य को देखते हुये, अनुभव करते हुए अन्य आत्माएं उनके भाग्य के गुण गाते हैं और अनेक आत्माओं को अपने श्रेष्ठ भाग्य के आधार से भाग्यशाली बनाने के निमित्त बनते हैं। तो देखो इन 4 सब्जेक्ट्स से किस स्टेज तक पहुँचे हो वा मंज़िल के कितना समीप आये हो? अच्छा! ऐसे सहज और स्वत: योगी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

### *पर्सनल मुलाकात*

ब्राह्मण जीवन में लास्ट जन्म होने के कारण शरीर से चाहे कितने भी कमजोर हैं या बीमार हैं, चल सकते हैं वा नहीं भी चल सकते हैं लेकिन मन की उड़ान के लिए पंख दे दिये हैं। शरीर से चल नहीं सकते लेकिन मन से उड़ तो सकते हैं ना क्योंकि बापदादा जानते हैं कि 63 जन्म भटकते-भटकते कमजोर हो गये। शरीर तमोगुणी हो गये हैं। तो कमजोर हो गये, बीमार हो गये। लेकिन मन सबका दुरूस्त है। शरीर में तन्दुरूस्त नहीं भी हो लेकिन मन में तो बीमार कोई नहीं है ना। मन सबका पंखों से उड़ने वाला है। पावरफुल मन की निशानी है--सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच जाए। ऐसे पावरफुल हो या कभी कमजोर हो जाते हो। मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच सकता है। अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में, सेकण्ड की रफ्तार है। तो ऐसी तेज रफ्तार है? सदा अपने भाग्य के गीत गाते उड़ते रहो। सदैव अमृतवेले अपने भाग्य की कोई न कोई नई बात स्मृति में रखो, अनेक प्रकार के भाग्य मिले हैं, अनेक प्रकार की प्राप्तियां हुई हैं, कभी किसी प्राप्ति को सामने रखो, कभी किसी प्राप्ति को रखो तो बहुत रमणीक पुरूषार्थ रहेगा। कभी पुरूषार्थ में अपने को बोर नहीं समझेंगे, नवीनता अनुभव करेंगे। नहीं तो कई बच्चे कहते हैं बस आत्मा हूँ, शिवबाबा का बच्चा हूँ, यह तो सदैव कहते ही रहते

हैं। लेकिन मुझ आत्मा को बाप ने क्या-क्या भाग्य दिया है, क्या-क्या टाइटल दिये हैं, क्या-क्या खजाना दिया है, ऐसे भिन्न-भिन्न स्मृतियां रखो। लिस्ट निकालो। स्मृतियों की कितनी बड़ी लिस्ट है! कभी खजानों की स्मृतियां रखो, कभी शक्तियों की स्मृतियां रखो, कभी गुणों की रखो, कभी ज्ञान की रखो, कभी टाइटल रखो। वैराइटी में सदैव मनोरंजन हो जाता है। कहाँ भी मनोरंजन का प्रोग्राम होगा तो वैराइटी डांस होगी, वैराइटी खाना होगा, वैराइटी लोगों से मिलना होगा। तब तो मनोरंजन होता है ना! तो यह भी सदा मनोरंजन में रहने के लिए वैराइटी प्रकार की बातें सोचो। अच्छा!

**वरदान:- स्वयं को जिम्मेवार समझकर हर कर्म यथार्थ विधि से करने वाले सम्पूर्ण सिद्धि स्वरूप भव**

इस समय आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का हर श्रेष्ठ कर्म सारे कल्प के लिए विधान बन रहा है। तो स्वयं को विधान के रचयिता समझकर हर कर्म करो, इससे अलबेलापन स्वत: समाप्त हो जायेगा। संगमयुग पर हम विधान के रचयिता, जिम्मेवार आत्मा हैं–इस निश्चय से हर कर्म करो तो यथार्थ विधि से किये हुए कर्म की सम्पूर्ण सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।

*स्लोगन:-*

**सर्वशक्तिमान् बाप साथ हो तो माया पेपर-टाइगर बन जायेगी।**

---

सूचना:-

1) प्राण बापदादा की अति लाडली रमा बहन, जो कि पिछले 50 वर्षो से समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रही थी। वर्तमान समय आप कर्नाटक के बेलगाम सेवाकेन्द्र पर सेवाओं में सलंग्न थी, आपका पूरा लौकिक परिवार शुरू से ही ज्ञान में है। आपकी लौकिक बहन शारदा अहमदाबाद लोटस हाउस में समर्पित रूप से सेवायें दे रही हैं। रमा बहन ने 3 अप्रैल 2011 को सवेरे-सवेरे अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली।

1) प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा की अति स्नेही, सदा याद और सेवा में तत्पर रहने वाली, लखनऊ इन्द्रानगर सेवाकेन्द्र की संचालिका स्मिता बहन, जो कि पिछले 21 वर्षो से समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रही थी। आपने नागपुर (महाराष्ट्र) में ज्ञान प्राप्त किया और लौकिक पढ़ाई पूरी करते ही सेवाओं में समर्पित हो गई। 4 वर्ष पूर्व आपको किडनी प्राब्लम हुई, इलाज चल रहा था। आप 46 वर्ष की आयु में 4-4-2011 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। ब्राह्मण परिवार दोनों आत्माओं प्रति अपनी स्नेह भरी श्रृद्धांजली अर्पित करता है।